

आधुनिक युगमां टिगंबर जैन धर्मना सथवारे स्त्रीओनो अने स्त्रीओ माटेनुं योगदान

डो. शैली गाला

आसिस्टन्ट प्रोफेसर, श्रीमती पी. ऐन. दोशी वुमन्स कोलेज, घाटकोपर वेस्ट,
मुंबई, 400086
ऐस ऐन डी टी युनिवर्सिटी.
email id: shaili.gala@spndoshi.com

प्रस्तावना

हिंदुओनी साथे, जैनो पण भारतमां सौथी प्राचीन धार्मिक समुदाय छे. तेमनी ओणभ तेमना अलग धर्मशास्त्र, तत्वज्ञान, धार्मिक-सामाजिक-कर्मकांडो, साहित्यिक परंपरा वगैरे द्वारा पुष्टि मठे छे. ऐतिहासिक काणमां जैनोनी मूण व्यवसाय स्थानिक अने लांबा अंतरनी वेपार रह्यो छे. परिणामे समाज आर्थिक रीते समृद्ध थयो छे. व्यवसाय साथेना समुदायने साक्षरताना केटलाक घटको प्राप्त करवानी इरज पाडी. ऐवुं कहेवामां अतिशयोक्ति नथी के आ समुदाय हमेशाथी साक्षर रह्यो छे. साक्षरताये तेमने प्राकृत अने अपभ्रंशा ने ज्वंत राभववा सक्षम बनव्या, जे भाषाओमां मोटी संख्यामां जैन शास्त्रीय, साहित्यिक अने दार्शनिक ग्रंथो छे. सामाजिक क्षेत्रे जैन धर्मनुं नोधपात्र योगदान ऐ छे के तेमणे महिलाओने जैन संघ मां प्रवेश आपी ने जातिनी कोछ भेद राभव्यो नथी. दक्षिण भारतना शिलालेभो परथी जाणवा मठे छे के जैन धर्म स्त्रीओ प्रत्ये उदार हतो. जैन धर्मना भक्तो तरीके मोटी संख्यामां सामान्य महिलाओ अने साध्वीओनी उल्लेख करवामां आव्यो छे. तेओ धर्म अने डिडोसोडोनी सनातन सत्यने समजवा अने अनुसरवानी उद्देश्य साथे ब्रह्मचर्यनुं ज्वन ज्वता हता. अजिता, यंदना, जयंती वगैरे महावीरना प्रभ्यात साध्वी-शिष्या हता. आ साध्वीओने जैन शास्त्रोनी अभ्यास करवानी परवानगी आपवामां आवी हती. हरिभद्रसूरी, आठमी सटीना जैन धर्मना नोधपात्र विद्वान, याकिनी नामनी जैन साध्वी थी प्रेरित हता. कंदब, गाओगा अने होयसला परिवारोनी महिलाओ तेमज सामंतओ, सेनापतिओ अने अन्य अधिकारीओनी पत्नीओये जैन धर्मना प्रचारमां विशिष्ट भूमिका लजवी हती. कान्ति जे प्रभर वक्ता अने कवियत्री हता, तेओ अभिनव पंचा साथे, होयसला राजा बल्लाल ना दरबार रत्नोमांना ऐक हता. राजवी, मंत्री अने सेनापति आदि भूमिका पण स्त्रीओ ये भूतकाणमां उमदा लजवी छे, तेनी उल्लेख जैन साहित्य अने शीला लेभोमां थयेलो छे. समय जता मोगलोना आक्रमण बाद समाजमां स्त्रीओनी ओनुं स्थान सीमित थवा लाज्युं अने ते घरनी चार टिवारो पूरती ज मर्यादित रही गछ. सेकडो वरस आवी परिस्थिति रक्षा बाद स्वतंत्रता यणवण ना ऐक भागउपे ज्यारे गांधीजुये स्त्री केणवणी माटे आहवान कर्तुं त्यारे देशभरमां घणा जैन श्रेष्ठीओ ये स्त्रीओ माटे शाणा अने महाविद्यालयो नी शउआत करी. लेभिका पण पोताने लाज्यशाणी माने छे जे ऐवी संस्था साथे जोडावेली छे जे आजथी सो वर्ष पहेला जैन मुनि पंडित रत्न चंद्र महाराज साहेबनी प्रेरणाथी स्त्रीओ शउ थछ हती. श्री पंडित रत्न चंद्र जैन कन्या शाणा ट्रस्ट ना नामे ओणभाती आ संस्था हेठण आज 5000 थी वधु विद्यार्थिनीओ शाणा अने महाविद्यालय मां अभ्यास करे छे.

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज अने 'भूकमाटी' महाकाव्य

अंग्रेजोना समयमां टिगंबर जैन धर्म प्रमाणे साधुओने आचार पाणवो लगभग असंभवित हतो तेथी मुनि परंपरा लगभग लुप्त थवानी आरे हती, त्यारे चारित्र सम्राट श्री शांति सागर जे तेने इरी ज्वंत करी, अने तेमना शिष्य ना शिष्य संत

शिरोमणी 108 आचार्य श्री विद्यासागर महाराज 20 मी सदीना इक्त दिगंबर जैन संप्रदायना ज नहीं परंतु समग्र ज्व सृष्टिना उपकारक, प्रेरक, मित्र अने गुड, अेक अेवा संत थई गया के जेमनुं ज्वन संपूर्ण दर्शन छे, जेमनुं आचरण ज्वो प्रत्ये कडुषा थी भरेलुं छे, जेमना विचारोमां सर्व ज्वोनुं कल्याण समायेलुं छे, जेमना उपदेशमां जगत तेना विकासना मार्ग मोकलो करे छे. तेमना विचारो भारतीयता, देशभक्ति अने कर्तव्यनिष्ठा प्रत्ये अपार वझादारीथी तरबोल छे. प्राचीन भारतीय शुभचिंतको, तत्वचिंतको अने संतोनुं अनुकरण करवा छतां तेमना विचारो मौलिक छे. शास्त्रीय (संस्कृत अने प्राकृत) अने कटलीक आधुनिक भाषाओ, हिन्दी, मराठी अने कन्नड ना निष्पात, ते हिन्दी अने संस्कृतमां अेक प्रबल लेभक हता. कटलाक संशोधकोअे मास्टर्स अने डोक्टरेट डिग्री माटे तेमना कार्योंनो अभ्यास कर्यों छे.

ई.स. 1987 आचार्यश्रीअे 'मूकमाटी' महाकाव्य रची इक्त हिन्दी साहित्य ज नहीं, परंतु समग्र साहित्य जगतने अलौकिक, अनेरी भेट आपी छे. ते महाकाव्य पर 2023 सुधी 52 पीअेयडी, तेमज धारा अेम डील ना शोध प्रबंध अने अेम.अे, अेम.अेड ना लघु शोध प्रबंध लभाया छे. आ शकवतीं ग्रंथ पर लगभग पोषा त्रणसो समीक्षकोअे 550 पृष्ठना अेक अेवा त्रण भंड हिन्दीमां मननीय समीक्षा लभी छे, जे भारतीय ज्ञानपीठे प्रकाशित करी छे. आठ जेटली जुटी जुटी भाषाओमां तेना अनुवाद थया छे. 17 डेब्रुआरी, 2024 ना रात्रे अेम नो उचार करी, समाधिष्ट थयेला आचार्य श्रीज्वने विनयाजलि आपता पद्मश्री कुमारपाण देसाई 25 डेब्रुआरी, 2024 ना गुजरात समाचार ना लेभमां लभे छे के 'मूकमाटी' महाकाव्यमां कोई प्रभावशाणी राजवीना चरित्रने, कोई ऐतिहासिक प्रसंग ने के कोई लव्य धार्मिक विषयनुं आलोचन नथी परंतु तुच्छ, पढ दलित अने सामान्य लागती माटे अेना विषय वस्तु तरीके मणे छे. अेक महाकाव्यनी रचना माटी ने लक्ष राभीने करवी, अे स्वयं अेक पडकार छे अथवा कहो के मौलिकता नो अेक यमत्कार छे. सामान्य बाबतने असामान्य बनावती अेमनी सजक प्रतिभानो स्पर्श आ ग्रंथमां पढे-पढे अनुभववाय छे. जमीन परनी विभरायेली माटी परथी कल्याणकारी मंगल कणश सुधीनी यात्रा दर्शावीने मानवीय चेतना ना विकासनी अनंत शक्यताओने ताकी छे अने अे रीते ठोडी भीण थी ठोया शिभर सुधीना अर्थात पापमांथी परमात्मा सुधीनी यात्रानो प्रेरक आलोच आभ्यो छे. कलाकृति तरीके मात्र माटीना उद्धारने प्रतिकात्मक सूत्र रुपे लईने कटकटला विषयमां आचार्यश्रीनी विचार यात्रा गति करे छे. अेमां धर्म, दर्शन, राजनीति, समाज, अर्थकारण, अने वर्तमान संस्कृति जेवा विषयो सांकणी लेवामां आव्या छे अने भूमी तो अे छे के आ बधा विषयोनी साथे साथे माटीनी विकासयात्रा नी साथे, व्यक्तिकी अने विश्वनी विकास यात्रा नी कथा प्रति ध्वनित थाय छे.

मूकमाटी महाकाव्यनुं गुजराती अनुवाद ब्रह्मचारी बिंदु पारेभ अने सह अनुवाद श्री भरतभाई कापडीयाअे कर्तुं छे. आचार्यश्री, भंड-त्रण पुष्यनुं पालन पाप- प्रक्षालन मां, पुष 200 मां लभे छे,

“छे नारी जतिनी लाक्षणिकताओ अनेक
छे जे पुरुष सन्मुख आदर्शरूप.”

नारीनी अपूर्व व्याख्या आपता तेओ जणावे छे,
“कडुषाकर छे नयनो तेनां,
नथी स्पर्शे शक्ति शत्रुता तेने,
मिलनसार मित्रता
थती प्राप्त तेनी कनेथी सहज, विनामूढे.
तेथी ज तो
तेनुं सार्थक नाम छे 'नारी' अर्थात
'न अरि', नारी...
अथवा नथी आरी तेओ
.....तेथी... नारी..?”

महिला शब्द नुं भूब ज अलौकिक अर्थघटन करता तेओ लभे छे, ज्वनमां मंगलमय माहोल जे लावे तेने महिला कहेवाय. जे पुरुष निराधार निरालंब, हतोत्सव ज्वन प्रत्ये उदासीन होय अे पुरुषमां धीरज आस्था जगावती तेने सन्मार्ग भणी दीरती

એટલે મહિલા.

અબલા શબ્દ વિશે તેઓશ્રીના અત્યંત હકારાત્મક વિચારો નીચેની પંક્તિઓમાં દ્રષ્ટિગોચર થાય છે.

“જે અવ અર્થાત

‘અવગમ’- જ્ઞાન જ્યોતિ પ્રગટાવતી,

મિટાવી તિમિર- તામસ

જાગૃતિ જીવનમાં લાવતી

‘અબલા’ તે કહેવાતી....!

અથવા જે પુરુષની ચિત્તવૃત્તિને

વિગત દશાઓથી

અને

અનાગત આશાઓથી

પૂર્ણપણે વેગળી કરી,

‘અબ’ અર્થાત

આગત- વર્તમાનમાં લાવતી

‘અબલા’ તે કહેવાતી....!”

અબલાની બીજી પરિભાષા આપતા તેઓ શ્રી લખે છે સંકટ નહીં તે, અબલા છે. આ અબલા વિના સબળ પુરુષ પણ નિર્બળ બને છે અને સમસ્ત સંસાર સમસ્યા સમૂહો પુરવાર થાય છે માટે જ અબલા તેના સાર્થક નામ છે. કુમારી શબ્દ નો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે કર્યો છે: ‘કુ’ અર્થાત પૃથ્વી, ‘માં’ અર્થાત લક્ષ્મી અને ‘રી’ અર્થાત્ આપનાર, તેનો ભાવાર્થ થાય છે કે જ્યાં સુધી આ ધરા પર કુમારી રહેશે ત્યાં સુધી ધરા સદા સંપન્ન રહેશે અને તેથી જ સંતોએ ખુમારીને પ્રથમ મંગલ સર્વ લૌકિક માંગલ્યોમાં કીધી છે.

સ્ત્રી એટલે કોણ? તે કેવી હોય? તેના અંતરના શું ભાવ છે? વગેરે નીચેની પંક્તિઓમાં દર્શાવાયું છે:

“‘સ’ અર્થાત સમશીલ સંયમ,

‘ત્રિ’ અર્થાત ત્રણ.

ધર્મ, અર્થ, કામ-પુરુષાર્થોમાં

પુરુષને કુશલ-સંયત કરતી

તેથી... ‘સ્ત્રી’ તે કહેવાતી....!

બેઉ કુળ નું મંગલ વધારતી,

બેઉ લોકનું સુખ સર્જતી,

સ્વ-પર હિત કરનારી,

ગમે ત્યાં રહીને, ગમે તે સહીને પણ

હિતનું દોહન કરતી

તેથી... ‘દુહિતા’ તે કહેવાતી....!

સદીઓથી પુરુષ સમાજને

આપતી આ સદુપદેશ નારી-

“ઓ અનંગ સંગ થકી બળતાં લોકો!

સાંભળો ,લગીરેક સાંભળો તો....!

સ્વીકારું છું... કે

છું હું ‘અંગના’

परंतु,
हुं केवळ अंग ना.....
शुं हुं कंठक विशेष पण...!
अंगनी भीतर पण
कंठक आंभवानो प्रयास करो,
सिवाय अंग पण
कंठक बीजुं मांगवानो प्रयास करो,
याहुं हुं आपने जे
छे या स्वीकारवानी तने?
'ते' चिरंतन शाश्वत छे
'ते' निरंजन भास्वत छे,
भार- रहित आभाजुं कर आभार दर्शन तुं!"

आवी अनेक अलौकिक अनुपम व्याख्याओ आपीने इकत नारीनुं ज नहीं परंतु समग्र जिवसृष्टिनुं गौरव आचार्य श्रीजुंये वधार्युं छे. साया संतो ये होय जे जेमनुं आचरण ज उपदेश होय. आम आचार्य श्रीजुंये इकत साहित्यमां ज स्त्रीओने महत्वनुं स्थान नथी आप्युं परंतु आचरणमां अनेक रीते मूकी बतव्युं छे.

प्रतिभास्थली - कन्या निवासी शैक्षणिक संस्था

कन्या उमय कुल वर्धीनी छे, तेथी तेना विकास साथे बे कुटुंबो तथा समाज सीधी रीते संकटायेलो होय छे, माटे आचार्य श्रीजुंनी अपार कृपा अने द्रष्टिथी प्रतिभास्थली - अनोभी कन्या निवासी शैक्षणिक संस्था सर्जो अने भीली छे. पश्चिमी संस्कृति ना भाडां गारकाव थछ रहेली भारतीय संस्कृति ने बचाववा अने भारतने इरी अेक विश्वगुरु बनाववानी तेमणे जंभना करी, अने तेमना मस्तकमांथी अेक स्वस्थ शिक्षणनी योजना घडवामां आवी तेना सात स्तंभो छे, स्वस्थ तन, स्वस्थ वयन, स्वस्थ मन, स्वस्थ धन, स्वस्थ वन, स्वस्थ वतन, स्वस्थ चेतन. जबलपुर(2006), डोंगरगढ (2012), रामटेक(2014), पापोराजु (2018), अने छन्दोर(2018) आ पांच जग्या पर प्रतिभास्थली शरु करवामां आवी छे, जेमां अत्यारे 3500थी वधु विद्यार्थीनीओनी लाभ लछ रही छे, 350 जेटली बाल ब्रह्मचारिणी विदुषी अने प्रशिक्षित शिक्षको विद्यार्थीनीओना उज्जवण लविष्य माटे तेमनी निःस्वार्थ सेवा आपी रह्या छे. सी.बी. अेस.सी. मान्यता प्राप्त संस्था आजना आधुनिक वातावरणमां प्राचीन गुरुकुलोनी स्मृतिने ज्वंत करी रही छे. "अहीं शिक्षणो उद्देश्य निर्वाह नथी पण जिवननुं सर्जन छे. शिक्षण अे पैसा कमावानुं साधन नथी परंतु ज्ञान आपवानी पवित्र प्रक्रिया छे." कस्तुरी रंग राजन कमिटीअे नेशनल अेज्युकेशन पोलिसी 2020 ना संदर्भमां आचार्य श्रीजुंनी अने प्रतिभास्थली प्रेरणादायक मुलाकात लीधी हती.

मरुदेवी हेन्डीकाइट

प्राचीन संस्कृति अने हस्तकला नी जाणवणी अने प्रोत्साहन माटे महिलाओना उत्थान तरङ् बीजो प्रोजेक्ट 'मरुदेवी हेन्डीकाइट' आचार्य श्रीजुंनी प्रेरणा अने मार्गदर्शन हेठण शरु थयो, ज्यां घणी महिलाओने आत्मनिर्भर जिवन जिववानो आधार मणी रह्यो छे अने तेओ पोतानी महेनत अने कला कौशल्य थी रसप्रद सामग्री जेम के- बेग, पर्स, साडी, कुर्ती, बेडशीट, माणा वगैरे तैयार करी रही छे.

आर्दिका 105 पूर्णमति माता

आचार्यश्रीना 400थी वधु विशाण शिष्य संघमां 172 जेटली आर्दिकाओ दीक्षित करी छे जे मोटे भागे ग्रेज्युअेट के डबल ग्रेज्युअेट होवा साथे बाण ब्रह्मचारिणी छे. तेमांनी ज अेक आर्दिका पूर्णमति माताअे साहित्य क्षेत्रे विशाण सर्जन करी भारतनी

अर्वाचीन विदुषियों मां पोतानुं नाम अंकित कर्तुं छे. जैन साहित्य नी अमर कृति आचार्यश्री मानतुंग जू रचित श्री भक्तामर स्तोत्र जे 48 गाथानुं छे, तेना दरेक अक्षर परथी ओक ओक गाथा बनावी, तेना बहुमानमां 2688 गाथाओ रयी श्री भक्तामर महामंडल विधान नी रचना करी. साहिताचार्य डो. सोनल कुमार जैन लपे छे के श्री भक्तामर महामंडल विधान आ काव्य मानवीय नथी, पण देवीय प्रतिभासंपन्न कवित्वनी सरलतम अभिव्यक्ति छे, जे प्रारंभिक स्तरना वाचकोने पण अटलुं ज अलहादीक अने आनंदित करे छे जेटला विषयना विशेषज्ञो!

पूर्वमति माताये 30 योवीसी विधान, श्री महावीर विधान, श्री नेमिनाथ विधान, तत्त्वार्थ सूत्र विधान, गुरुभक्ति शतक, आत्मबोध शतक, प्रभु भक्ति शतक वगैरे अनेक प्रकारना साहित्यनुं सर्जन करी भारतीय ज्ञान प्रणालीमां अनेरुं योगदान आप्युं छे.

आर्थिका 105 ज्ञानमतीजु माता

दिगंबर संप्रदायना प्रथम आर्थिका पूज्य ज्ञानमतीजु माता दिगंबर जैन इतिहासमां प्रथम क्षुल्लिका अथवा जैन साध्वी तरीके गणवामां आवे छे. आदरणीय गनीनी आर्थिका रत्न ज्ञानमती माताजु अे तेमनी अनुभूति नी अडधी सदी नो समयगालो पूर्ण कर्यो छे जे दिगम्बर जैन आर्थिका संघना इतिहासमां भूष ज नोधपात्र अने गौरवपूर्ण घटना अने सिद्धि छे. तेमणे ज्ञान अने त्यागना अनोभा संगम द्वारा आध्यात्मिक उन्नति ना क्षेत्र पर पग मूक्यो छे. रोपकाराय सताविभूतयः जेवा ध्येयो अने उद्देश्यो सिद्ध करवा माटे तेमणे 'अभिल भारतीय जैन महिला संगठन' तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विधवा महासंघ', 'त्रिलोक शोध संस्थान' जेवी घण्टी संस्थाओनी स्थापना करी छे. ज्ञानमतिमाताये न्याय-अष्ट सहस्रीनो ओक प्रख्यात संस्कृत ग्रंथ, वर्ष 1969मां हिन्दीमां अनुवाद करीने विद्वानोनी दुनिया ने आश्चर्यमां मूकी दीधी हती. ते हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड, मराठी वगैरे जेवी विविध भाषाओनी निष्ठात पण बनी हती.. पछीथी समयसार, नियमसार वगैरे पर संस्कृत अने हिन्दी मां समजूती रयी; स्वाध्याय माटे शास्त्रो-जैन ભારતી, જ્ઞાનામૃત, ત્રિલોક-ભાસ્કર, પ્રવચન નિર્દેશિકા વગેરે; પ્રતિજ્ઞા, સંસ્કાર, ભક્તિ, આદિ બ્રહ્મ, આટે કા મુર્ગા, જીવનદાન જેવી નવલકથા વગેરે 450 થી વધુ પુસ્તકો ની રચના કરી; 1995માં અવધ યુનિવર્સિટી (કૈાબાદ) અને 8 એપ્રિલ 2012 ના રોજ તીર્થંકર મહાવીર યુનિવર્સિટી, મુરાદાબાદ દ્વારા "D.Litt" ની માનદ પદવી એનાયત કરવામાં આવી. જૈન ગણિત અને ત્રિલોક વિજ્ઞાન પર આંતરરાષ્ટ્રીય પરિસંવાદ, રાષ્ટ્રીય ઉપકુલપતિ પરિષદ, ઇતિહાસકારોની પરિષદ, ન્યાયાધીશોની પરિષદ અને અન્ય ઘણા રાષ્ટ્રીય અને આંતરરાષ્ટ્રીય સ્તરે સેમિનાર વગેરેનું આયોજન અને નેતૃત્વ કર્યું. જંબુદ્વીપ, તેહદ્વીપ, ત્રીનલોક વગેરે જેવી અનન્ય રચનાઓ નું સર્જન અને ભગવાન શાંતિ-કુંથુ-અરનાથ ના જન્મ સ્થળ હસ્તિનાપુરમાં 31-31 ફૂટ ઊંચી ભગવાન શાંતિ-કુંથુ-અરનાથ ની વિશાળ મૂર્તિઓની સ્થાપના ની પ્રેરણા અને નેતૃત્વ કર્યું. શાશ્વત તીર્થ સ્થળ અયોધ્યા નો વિકાસ અને જીર્ણોદ્ધાર, આદિનાથ-અજિતનાથ-અભિનંદનાથ-અનંતનાથ ના જન્મ સ્થળ ટોક ખાતે ભવ્ય મંદિરનું નિર્માણ, 'નંદ્યાવર્ત મહેલ' નામના તીર્થસ્થાન નું ભવ્ય નિર્માણ, ભગવાન મહાવીરના જન્મ સ્થળ કુંડલપુર (નાલંદા-બિહાર), ભગવાન મુનિસુવ્રતનાથ જન્મભૂમિ રાજગૃહ અને ભગવાન શ્રેયાંસનાથ જન્મભૂમિ સિંહાપુરી (સારનાથ) ખાતે મંદિરનું નિર્માણ, ભગવાન ઋષભદેવ દીક્ષા ભૂમિ પ્રયાગ-અલાહાબાદ (ઉત્તર પ્રદેશ) ખાતે તીર્થંકર ઋષભદેવ તપસ્થલી તીર્થનું નિર્માણ, ત્રીસ ભગવાન ચૌબિસનાથ મંદિરનું નિર્માણ, અલ્લાહાબાદ અને ત્રીસ ભગવાન ચૌબિસનાથ મંદિરનું નિર્માણ. શિખર જી, પાવાપુરી, ગુણવાન, માંગીતુંગી વગેરે ખાતે મંદિરોનું નિર્માણ, સનાવડ (M.P.) ખાતે નમોકાર ધામ તીર્થનું નિર્માણ, માંગિતુંગીમાં નિર્માણાધીન ભગવાન ઋષભદેવની વિશાળ 108 ફૂટ ઊંચી પ્રતિમા, ભગવાન મહાવીર કેવલજ્ઞાન ભૂમિ વિકાસ અને સમ્મેદ શિખરજી માં "આચાર્ય શ્રી શાંતિસાગર ધામ" નો વિકાસ વગેરે કાર્યો તેમના માર્ગદર્શન હેઠળ થયા છે.

આર્થિકા 105 સુપાર્શ્વ મતી માતાજુ

આચાર્ય 108 વીર સાગરજી મહારાજ ના શિષ્યા આર્થિકા સુપાર્શ્વ મતી માતાજુ દ્વારા લિખિત અને અનુવાદિત ગ્રંથની સૂચિ આ પ્રમાણે છે: પરમ અધ્યાત્મ તરંગિણી, સાગર ધર્મામૃત, નારી ચાતુર્ય, અનગાર ધર્મામૃત, મહાવીર ઓર ઉનકા સંદેશ, નય વિવક્ષા, મેરા ચિંતવન, નૈતિક શિક્ષા પ્રદ કહાનિયા ભાગ 10, 20 થી અધિક કૃતિ છે.

आर्यिका 105 विशुद्ध मती माताज

આચાર્ય 108 વીર સાગરજી મહારાજ ના શિષ્યા આર્યિકા વિશુદ્ધ મતી માતાજી દ્વારા શ્રીમદ સિદ્ધાંત ચક્રવર્તી નેમિચંદ્રાચાર્ય વિરચિત ત્રિલોક સારકી સચિત્ર હિન્દી ટીકા, ભદ્રારક સકલ કીર્ત્યાચાર્ય વિરચિત સાત દીપક અપર નામ કે દીપિકા કે હિન્દી ટીકા, ગુરુ ગૌરવ, શ્રાવક સોપાન ઔર બાર ભાવના આદિ સાહિત્ય સર્જન કર્યું છે.

ગુજરાત સરકારના અગ્ર સચિવ મોના ખંધાર: આચાર્યશ્રી ની પ્રેરણાથી હજારો શ્રાવિકાઓએ પણ સમાજના વિભિન્ન ક્ષેત્રોમાં પોતાનું યોગદાન નોંધાવ્યું છે, તેમાંના એક એટલે ગુજરાત સરકારના અગ્ર સચિવ મોના ખંધાર. 21 વર્ષની ગ્રેજ્યુએટ યુવતી જે આચાર્ય શ્રીજી ના શિષ્યા બનવા તક પર હતી, તેની કુશાગ્ર બુદ્ધિ જોઈ આચાર્યશ્રીએ તેને IAS પરીક્ષાની તૈયારી કરવા જણાવ્યું. ગુરુ ના આશીર્વાદ ના અને અપાર મહેનત ફળ સ્વરૂપે સિવિલ સર્વિસ પરીક્ષા માં દેશભરમાં સાતમો ક્રમ મેળવી ટોચની ક્રમાંકિત મહિલા ઉમેદવાર તરીકે ઉભરી આવ્યા . હાલમાં પંચાયત, ગ્રામીણ આવાસ અને ગ્રામીણ વિકાસ વિભાગ અને મહેસુલ વિભાગના અગ્ર સચિવની નિર્ણાયક જવાબદારી સંભાળવાની સાથે તેઓ વિજ્ઞાન અને ટેકનોલોજી વિભાગના અગ્ર સચિવ નો ચાર્જ ધરાવે છે. જાપાનમાં ભારતીય રાજદૂત વાસમાં સેવા અને G20 દરમિયાન પણ મહત્વની જવાબદારી નિભાવી ચૂકેલા મોના ખંધાર 25 વર્ષથી વધુ લાંબી કાર કારકિર્દી ધરાવે છે. શૈક્ષણિક રીતે, મોના ખંધારે હાલડ કેનેડી સ્કૂલમાંથી આંતરરાષ્ટ્રીય અર્થશાસ્ત્ર માં મેશન ફેલો અને MPA ઉપરાંત સિરાકયુઝ યુનિવર્સિટીમાં પોસ્ટ ગ્રેજ્યુએશન નો અભ્યાસ કરી EPPA (ઇન્ટરનેશનલ ટ્રેડ ફાયનાન્સ) માં ડિગ્રી મેળવે છે. આ સિદ્ધિઓ પહેલા, તેઓ મુંબઈ યુનિવર્સિટીમાંથી ફાઇનાન્સિયલ એકાઉન્ટિંગ, કોસ્ટ એકાઉન્ટ અને કમ્પ્યુટર પ્રોગ્રામિંગ માં વિશેષતા ધરાવતા કોમર્સને સ્નાતક ડિગ્રી ની સાથે સ્નાતક થયા હતા.

વિશ્લેષણ અને નિષ્કર્ષ

દિગંબર જૈન સંપ્રદાયમાં એવું કહેવાય છે કે સ્ત્રી નો અવતાર તે પાપનું ફળ છે, સ્ત્રી પર્યાય માં જૈન મૂર્તિનો સ્પર્શનો અધિકાર નથી, સ્ત્રી પર્યાય થી મોક્ષ સંભવિત નથી, તે જ દિગંબર જૈન સંપ્રદાયમાં સ્ત્રી ના સર્વાંગી વિકાસ માટે આચાર્યશ્રી જીના માર્ગદર્શન હેઠળ પ્રયત્નો થયા છે અને તે જ સંપ્રદાયમાંથી સેકડો આર્યિકા, બાલ બ્રહ્મચારી બહેનો અને શ્રાવિકાઓએ ભારતીય જ્ઞાન પ્રણાલીમાં અને જૈન પરંપરા માટે અભૂતપૂર્વ યોગદાન 20મી અને 21મી સદીમાં કર્યું છે. પ્રતિભાસ્થલી જેવી શિક્ષણ સંસ્થા માંથી નીકળેલી જૈન અને જૈનેતર વિદ્યાર્થિનીઓ આજે સમાજમાં આદરણીય અને પ્રમાણિક રેડિયોલોજીસ્ટ, એડવોકેટ, એન્જિનિયર, પ્રોફેસર, ડોક્ટર આદિ રૂપે સેવા આપી સ્વસ્થ અને આદર્શ સમાજ માટે બહોળું યોગદાન આપી રહી છે. પાશ્ચાત્ય દેશોમાં છેલ્લા 300 વર્ષની અંદર જ એવું કહેવાતું વિકાસ થયો કે જેમાં આકાશ, જળ, પૃથ્વી કંઈ પણ સારું રહ્યું નહીં, વિકાસ ના નામે વિનાશ ની ઔર જ જગત ધસ્તુ ગયું. તેમની સંસ્કૃતિ માં સ્ત્રી સશક્તિકરણ એટલે સ્ત્રીઓનું આત્મનિર્ભર થવું પણ તેમાં ક્યાંય પણ મૂલ્ય શિક્ષણ, સંસ્કાર, ધર્મ વગેરે ભાગ ભજવતો ન હતો. જ્યારે ભારતની હજારો લાખો વર્ષ જૂની સંસ્કૃતિ એટલે ટકી શકે છે કારણ કે ધર્મ, મૂલ્યો, સંતો વગેરે રોજિંદા જીવનના અભિનય અંગો હતા . આ જ સંસ્કૃતિને ટકાવી રાખવા આચાર્યશ્રી અને આર્યિકા માતાઓ પ્રતિભાસ્થલી જેવી સંસ્થા ના માધ્યમે સુસંસ્કૃત, શિક્ષિત, મૂલ્યોને આધારે જીવન જીવતી સ્ત્રીઓનો અને સમાજના ઘણતર અને વિકાસનું બીડું ઝડપ્યું છે. તેના સુંદર ફળ સ્વરૂપે મોના ખંધાર જેવી હજારો સુસંસ્કારી, ધાર્મિક, મૂલ્ય આધારિત જીવન નિર્વાહ કરનારી સ્ત્રીઓ સમાજમાં પોતાનું બહોળું યોગદાન આપી રહી છે. આજ સન્નારીઓ વસુધૈવ કુટુંબકમ જેવી ભારતીય સંસ્કૃતિને જાળવી, સમગ્ર જગતને જ્ઞાન, કલા, વિજ્ઞાન વગેરેનો સંયમિત અને સુનિયોજિત ઉપયોગ કરવાનું માર્ગદર્શન પૂરું પાડી ભારતને વિશ્વ ગુરુ બનાવવા માટે તૈયાર છે.

સંદર્ભ ગ્રંથ

- [1] Baal Br. Pt. Sumat Prakash Ji. “આચાર્ય શ્રી વિદ્યાસાગર જી મહારાજ કે જીવન કે પ્રેરક પ્રસંગ || આ. બાલ બ્રહ્મચારી શ્રી સુમતપ્રકાશજી.” *YouTube*, 25 Feb. 2024, www.youtube.com/watch?v=sGyBfVOpB74.
- [2] Digjainwiki. “Aryika Shri 105 Suparswamati Mata Ji (Mainsar) - DigJainWiki.” *DigJainWiki - the Place for Digambar Jain Information*, 18 Dec. 2023, [digjainwiki.org/wiki/aryika-shri-105-suparswamati-mata-ji-mainsar](https://www.digjainwiki.org/wiki/aryika-shri-105-suparswamati-mata-ji-mainsar).

- [3] ---. "Aryika Shri 105 Vishuddhmati Mata Ji 1929 - DigJainWiki." *DigJainWiki - the Place for Digambar Jain Information*, 27 Dec. 2023, digjainwiki.org/wiki/aryika-shri-105-vishuddhmati-mata-ji-1929.
- [4] Jain, Harsh. "Pujya Gyanmati Mataji Granth Suchi - Encyclopedia of Jainism." *Encyclopedia of Jainism - Encyclopedia of Jainism*, 5 Dec. 2023, encyclopediaofjainism.com/pujya-gyanmati-mataji-granth-suchi.
- [5] Jainworld. "CONTRIBUTIONS OF JAINISM TO INDIAN CULTURE - Jainworld." *Jainworld*, 26 Aug. 2022, jainworld.com/literature/jain-history/contributions-of-jainism-to-indian-culture.
- [6] Jainworld. "SOCIAL LIFE OF THE JAINA COMMUNITY IN MEDIEVAL TIMES - Jainworld." *Jainworld*, 26 Aug. 2022, jainworld.com/literature/jain-history/social-life-of-the-jaina-community-in-medieval-times.
- [7] Jambudweep. "श्री ज्ञानमती माताजी का परिचय (मुख्य) - Encyclopedia of Jainism." *Encyclopedia of Jainism - Encyclopedia of Jainism*, 7 Jan. 2024, encyclopediaofjainism.com/%E0%A4%97%E0%A4%A3%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%80%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%AE%E0%A5%81%E0%A4%96-%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%80-%E0%A4%9C%E0%A5%8D%E0%A4%9E%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A4%AE-3.
- [8] Vidya purn. "#विद्यापूर्ण आ.रत्न 105 पूर्णमति माताजी को वैराग्य कैसे हुआ जाने इस संस्मरण के माध्यम से." *YouTube*, 20 Jan. 2021, www.youtube.com/watch?v=t3JNCER4Uz8.
- [9] "आर्यिका 105 पूर्णमती माता जी." *Vidyasagar Ji Maharaj | Vidyasagar Ji Maharaj Pravachan | Jain Religion in Hindi*, www.vidyasagar.net/aryika-105-purnamati-mata-ji.
- [10] "दीक्षित आर्यिकाएं." *Vidyasagar Ji Maharaj | Vidyasagar Ji Maharaj Pravachan | Jain Religion in Hindi*, www.vidyasagar.net/aryika-2.
- [11] देसाई, कुमारपाल "मूकमाटी चैक कृति पर 52 संशोधकोने पीअेयडी" गुजरात समाचार, 25 डेब्रुआरी 2024
- [12] मेरे गुरुवर... आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज. "जैन आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज www.AcharyaVidyasagar.com. मेरे गुरुवर... आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, 5 Sept. 2021, vidyasagar.guru/acharyashri.
- [13] "प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ." मेरे गुरुवर... आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, 24 Feb. 2001, vidyasagar.guru/clubs/16-group.
- [14] मूकमाटी, आचार्य श्री विद्यासागर महाराज, अनुवादक ब्रह्मचारी बिंदु पारेष, सह अनुवादक श्री भरतभाई कापडिया, भारतीय ज्ञानपीठ, न्यु दिल्ली, 2016